अशोक का धम्म: पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रचार-प्रसार

भाग-1

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सा।।।हरसा

अशोक इतिहास में एक चक्रवर्ती सम्राट से ज्यादा मानव की नैतिक उन्नति के लिए जीवन पर्यंत प्रयास करने वाला व्यक्तित्व के लिए विख्यात है. सत्य, अहिंसा और जीव के कल्याण के लिए वह हमेशा प्रयत्नशील रहा. कलिंग के युद्ध के पश्चात उसका सारा ध्यान मानव कल्याण की तरफ गया. इसके लिए उसने जिन धर्म सिद्धांतों का विकास और प्रचार किया वह इतिहास में अशोक के धम्म के नाम से विख्यात है. हम इस पोस्ट में इसके स्वरूप, पहलू, प्रचार-प्रसार एवं इसे प्रभावित करने वाले तत्वों पर चर्चा करेंगें|

अशोक के धर्म को प्रभावित करने वाले तत्व

यद्यपि अशोक बौद्ध धर्म का अनुयाई था और बौद्ध धर्म उसका व्यक्तिगत धर्म था लेकिन जनसाधारण के लिए उसने जिस धर्म का प्रचार वह बौद्ध धर्म से भिन्न था. अशोक जिस वातावरण में रहा था उसने उसे स्वतंत्र रूप से विचार करने की शक्ति दी. मौर्य साम्राज्य की स्थापना के साथ ही मौर्य शासकों का विदेशियों से घनिष्ठ संबंध कायम हुआ. यह प्रक्रिया चंद्रगुप्त मौर्य से अशोक तक चलती रही. इससे मौर्य शासकों की मानसिकता कट्टरपंथी और रूढ़िवादी नहीं रह गयी.

चंद्रगुप्त, बिंदुसार, अशोक सभी धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेते थे परंतु उन्होंने अपने धार्मिक विश्वासों को जनता पर थोपने का प्रयास कभी नहीं किया. अशोक ने तो धम्म के रूप में एक ऐसा आदर्श जनता के सामने रखा जिसे वह सहर्ष और आसानी से ग्रहण कर अपना नैतिक उत्थान कर सके.

धम्म की नीति कार्यान्वित करने के पीछे कुछ अन्य कारण भी थे. एक तरफ नए धर्म बौद्ध एवं जैन का प्रभाव बढ़ता जा रहा था तो दूसरी तरफ वैदिक या ब्राह्मण धर्म में सुधार लाकर इसे सर्वगाह्य बनाने का प्रयास हो रहा था. ऐसी स्थिति में सामाजिक वातावरण अशांत था. नए और पुराने धर्मों के बीच टकराव की संभावना से बचने के लिए तथा सामाजिक एकता को बनाए रखने के लिए दोनों धर्मों के बीच का मार्ग निकालकर जनता के कल्याण के लिए अशोक ने अपना नया धर्म आरंभ किया.

रोमिला थापर जैसे इतिहासकारों का विचार है कि अशोक ने राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित होकर नया धम्म की कल्पना की तथा इसका प्रसार किया. अशोक के समय तक मौर्य सम्राट जितना विशाल और सुदृढ़ हो चुका था उसकी सुरक्षा के केवल दो ही उपाय थे. पहला सैन्य बल और दूसरा धार्मिक एकता.

पहली व्यवस्था में एक कठिनाई यह थी कि ऐसा तभी संभव था जब राजा योग्य और शक्तिशाली हो. कमजोर और अयोग्य शासक साम्राज्य की सुरक्षा केवल सेना के बल पर नहीं कर सकते थे. साम्राज्य की सुरक्षा का दूसरा उपाय था सभी धर्मों को संकलित सारग्रहित धर्म को अपनाना.

दूसरा तरीका ज्यादा सुगम और लाभदायक था. अशोक ने सैनिक शक्ति के बदले धर्म के आधार पर साम्राज्य में रहने वाले सभी वर्गों, समुदायों, राजनीतिक इकाइयों को संगठित कर एक सूत्र में बांधकर मौर्य साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास किया. अशोक का धम्म राजनीति से प्रेरित था और बाद में मुगल सम्राट अकबर ने भी यही कार्य किया. हालाँकि कुछ आधुनिक विद्वान रोमिला थापर के विचार से सहमत नहीं हैं.

बौद्ध अनुश्रुतियाँ और स्वयं अशोक के अभिलेख (13 वां) में वर्णन है की कलिंग के युद्ध के बाद उसका हृदय परिवर्तित हो गया और उसने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया. उसके धम्म का स्वरूप बाद में विकसित हुआ अतः अन्य कारणों के अतिरिक्त अशोक का धम्म निश्चित रूप से राजनीति से भी प्रभावित था.